International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 11 Issue 8 August. 2022 || PP. 65-66

संगीत–शिक्षा, संगीत–साधना एवं नारी

डॉ0 प्रभा वार्ष्णेय
एसोसिएट प्रोफेसर, (संगीत विभाग)
श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय,
अलीगढ

सार *: – नारी पृथ्वी की आदि–शक्ति है। अति प्राचीन काल से नारी संगीत, साहित्य, प्रेम एवं भक्ति से आबद्ध रही है। नारी अपने भावों की अभिव्यक्ति संगीत के माध्यम से मनमोहक रूप से करती है। नारी का प्रत्येक क्रिया–कलाप संगीतमय होता है। यह सर्वविदित है कि सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव साहित्य एवं संगीत पर अवश्य पड़ा। प्रत्येक मनुष्य को अपने–अपने क्षेत्र में निपुणता हासिल करने के लिए अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। फिर भी मुसीबतों, तकलीफों एवं संघर्षों के गर्भ से न जाने कितने महान कलाकारों का जन्म हुआ। अपने जीवन में भीषण गरीबी की मार सहते हुए एवं परिवार का आर्थिक बोझ ढ़ोते हुए भी संगीत में अपार आस्था एवं साहस के बल पर तथा अपनी संगीत साधना में विश्वास के बल पर अनेक महिला कलाकारों ने संगीत जगत में अपना नाम रोशन किया है।*

संकेत शब्द *– संगीत, शिक्षा, साधना, नारी*

नारी अपने भावों की अभिव्यक्ति संगीत के माध्यम से मनमोहक रूप से करती है। नारी का प्रत्येक क्रिया–कलाप संगीतमय होता है। सुकुमारता, मृदुलता, मादकता, सरसता, वात्सल्यता आदि अनेक भावों को नारी जितनी कुशलता से अभिव्यक्त करती है, पुरूष नहीं। नारी और संगीत का अटूट सम्बन्ध है।

भारतीय संगीत परम्परा की तरह नारी सभ्यता भी प्राचीन है। ऐसा विश्वास है कि सामवेद से ही ब्रह्मा ने संगीत की उत्पत्ति की और माँ सरस्वती को संगीत की अधिष्ठात्री माना। भारतीय इतिहास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वैदिक काल से ही संगीत का प्रचार प्रसार समाज में हुआ तथा स्त्री एवं पुरूष दोनों को ही समान रूप से संगीत की शिक्षा दी जाती थी लिंग भेद लेश मात्र भी देखने को नहीं मिलता था। वैदिक काल में अभिजात कुल की महिलाओं को गायन तथा वादन की शिक्षा दी जाती थी।

महाकाव्य काल में संगीत का पर्याप्त प्रचार था लेकिन संगीत की सर्वाधिक उन्नति भारतीय सम्राटों के शासन काल में हुई। इतिहास साक्षी है कि कुलीन गृहों की कन्याएँ गणिकाओं से संगीत शिक्षा लेने जाती थी। मौर्य सम्राट अज्ञातशत्रु के शासन से पहले आम्रपाली जैसी नगर वधुओं के प्रासाद में संगीत सदैव गुंजरित रहता था। उस समय संगीत सर्वसाधारण से लेकर सम्राट तक की वस्तु था। संगीत शिक्षा और वह भी नारी की संगीत शिक्षा पर प्रतिबंध नहीं था। परन्तु बाद के समय में हम देखते हैं कि नारी की संगीत शिक्षा पर धीरे–धीरे प्रतिबंध लगने लगे।

मुगलकाल के सम्राटों ने संगीत को प्रश्रय अवश्य दिया परन्तु स्त्रियों को संगीत शिक्षा से वंचित रखा, क्योंकि इस्लाम में स्त्रियों की संगीत शिक्षा पर प्रतिबंध है। वैसे भी संगीत इस समय बादशाहों के मनोरंजन के लिए ही था लेकिन बादशाह अकबर इसका प्रतिवाद है क्योंकि इस समय स्त्रियों की संगीत शिक्षा पर प्रतिबंध नहीं था।

यह सर्वविदित है कि सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव, साहित्य और संगीत पर अवश्य पड़ता है। अतः जब नारी को परदे के पीछे कैद किया जाने लगा और हर क्षेत्र में पुरूष का अधिकार होने लगा तो संगीत की शिक्षा लेना तो दूर अन्य क्षेत्रों में भी स्त्रियों को दूर रखा जाने लगा। बाद में संगीत को बहुत ही दृेय दृष्टि से देखा जाने लगा। इसका सबसे बड़ा कारण संगीतज्ञों को राज दरबारों में आश्रय देना है।

प्रत्येक कार्य में निपुणता हासिल करने के लिए यों तो किसी भी व्यक्ति को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है परन्तु यहाँ मेरा अभिप्राय संगीत शिक्षण के क्षेत्र में आने वाली केवल उन समस्याओं से अवगत कराना है जो किसी पुरूष शिक्षार्थी की अपेक्षा केवल महिला शिक्षार्थियों के ही सामने आती हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् संस्थागत या विद्यालयीन शिक्षण विधि में संगीत का प्रचार व प्रसार तीव्र गति से होने से संगीत अब केवल नबावों या बादशाहों की धरोहर नहीं रहा यह जनसमान्य की कला बन गई है। आज महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने के अनेक साधन सुलभ हो गए हैं तथापि इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि प्रत्येक युग में संगीत के क्षेत्र में नारियों का विशेष योगदान रहा है। संगीत के क्षेत्र में अधिकांश उन्हीं महिलाओं का योगदान रहा है जिन्हें संगीत की शिक्षा विरासत में ही प्राप्त होती रही है और यह विद्या हासिल करने के लिए उन्हें किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा।

आधुनिक युग की संस्थागत शिक्षण प्रणाली के अंतर्गत जिस तरह संगीत का प्रचार प्रसार जन सामान्य में हो रहा है उसमें संगीत का परम्परागत शास्त्रीय रूप सुरक्षित रख पाना सम्भव नहीं है क्योंकि संगीत एक गुरूमुखी विद्या है। आज हमारे सम्मुख यह प्रश्न उठता है कि क्या आज के समय में संगीत सीखने की इच्छुक महिलाओं के लिए ऐसा कर पाना सम्भव है? यह एक विचारणीय प्रश्न है। संगीत के उच्चतम शिखर तक पहुँचने के लिए महिला शिक्षार्थियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

आज के इस सामाजिक ढाँचे में जहाँ प्रतिदिन बलात्कार, हत्याऐं एवं लड़ाई झगडा जैसे समाचार लगातार समाचार पत्रों में प्रमुख शीर्षक के रूप में रहते हैं वहाँ कोई भी माता–पिता अपनी बेटियों को घर से बाहर रहकर संगीत सीखने की अनुमति नहीं देते। कुछ महिलाओं को छोड़कर जिनके घरों में ही संगीत सीखने की व्यवस्था है या हो सकती है। वह भी संगीत की शिक्षा ले पाती हैं अन्यथा सामान्य परिवार की महिलाएँ सीखने की तीव्र इच्छा रखते हुए भी इस विद्या से वंचित रह जाती हैं।

आधुनिक युग में, महिला हर क्षेत्र में पुरूषों की बराबरी कर रही है तो संगीत तो उसका अपना क्षेत्र है। इस क्षेत्र में उसका रूझान होना स्वाभाविक और सहज है। लेकिन संगीत शिक्षा से लेकर कलाकार के रूप में प्रतिष्ठत होने तक के समय का अंतराल होना अनेकानेक संघर्षो एवं समस्याओं से युक्त है। गृहस्थी, नारी की कमजोरी है यह कहा जाए, तो अत्युक्ति नहीं होगी। गृहस्थी की जिम्मेदारियाँ उसकी संगीत साधना को निश्चित रूप से सीमित कर देती है।

नारी की संगीत साधना के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं के अतिरिक्त कुछ निजि समस्याएँ भी हैं। नारी चाहे विवाहित हो, अविवाहित, गृहस्थी उसकी साधना में, किसी न किसी समय व्यवधान बनती है। यदि विवाह से पूर्व इस क्षेत्र में प्रगति हो जाए तो क्या वह अपनी साधना को निरन्तर कर सकती है। बहुत सी महिलाएँ जो विवाह से पूर्व संगीत के क्षेत्र में अपना स्थान बना चुकी थी, विवाह के पश्चात उन्हें केवल गृहिणी बनकर ही संतोष करना पड़ता है। यदि ससुराल पक्ष के सदस्य अनुकूल हैं तब तो कठिनाई नहीं होती अन्यथा कहीं न कहीं समझौता करना ही पड़ता है। जब परिवार बढ़ने लगता है तथा कुछ शारीरिक सीमाओं के कारण संगीत साधना में व्यवधान हो सकता है। अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा संगीत साधना में अधिक समय, परिश्रम एवं एकाग्रता की आवश्यकता होती है। गृहस्थी में आने वाली हर प्रकार की समस्याऐं उसकी कला साधना को प्रभावित कर सकती है।

संगीत को समर्पित अविवाहित महिलाओं की भी अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। महत्वकांक्षी छात्राओं के लिए संगीत शिक्षा आर्थिक दृष्टि से एक बहुत बड़ी चुनौती होती है। अन्य शिक्षाओं की अपेक्षा संगीत शिक्षा महँगी भी है। यदि कलाकार बनना है तो कई वर्षो

तक विधिवत् गुरू से शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक है। नारी को चाहिए कि अपनी पढ़ाई की, संगीत की, नृत्य की आधारभूत तालीम गृहस्थी की जिम्मेदारी सिर पर आने के पूर्व ही पूरी कर ले। गृहस्थी के साथ ये सब असंभव नहीं, तो भी अत्यंत कठिन हो जाता है। दो नावों में पैर रखने वालों की जो हालत होती है, वही हालत गृहस्थी के साथ संगीत–साधना करने वाली नारी की होती है। एक ऐसी ही नारी का अनुभव बता रही हूँ।

उस रात संगीत के कार्यक्रम से काफी देर में लौटी, तो सोने में भी देर हो गई। फिर भी प्रातःकाल अंतःस्फुरणा से जागकर उसने मुँह धोया, तानपूरा मिलाया तथा स्वर–साधना प्रारंभ की। अभी पंद्रह–बीस मिनट मुश्किल से बीते होंगे कि दूधवाला आ गया। दूध लेने उठी, थोड़ी ही देर में पेपर वाला, धोबी, महरी, जमादारिन इत्यादि का सिलसिला चल पड़ा। तानपूरे को तो कोने में रख दिया और सुबह के चाय–नाश्ते, बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करना, उनका टिफिन तैयार करना, स्नान, पूजा, रसोई, कपड़े धोने इत्यादि काम नित्य की भाँति चलने लगे। पतिदेव ऑफिस गए। सब काम निपटाते–निपटाते करीब सवा ग्यारह बज गए। लगातार जल्दी–जल्दी काम करने से थोड़ा सुस्ताने का, बैठने का मन हो रहा था, फिर भी अपने–आप पर थोड़ी जबरदस्ती करते हुए उसने फिर तानपुरा उठाया। अभी देसी राग के स्वरों का प्रारंभ ही किया था कि पड़ोस की महिला थोड़ी चीनी माँगने आ गई और तीसरी बार उसने तानपुरा उठाया ही था कि पोस्टमैन आ गया। इसके बाद तानपुरा उठाने की हिम्मत उसमें नहीं बची थी। थोड़ी देर अखबार पढ़ा। बच्चे स्कूल से आए, उनको भोजन कराया, खुद भी भोजन किया। दोपहर में बच्चों को होम–वर्क करवाया, फिर बाजार गई, सब्जी लाई, पतिदेव ऑफिस से आ गए, तो शाम को नाश्ता तथा खाना बनाया। रात को या तो पतिदेव के कोई दोस्त या अन्य कोई मिलने आ गया और, जब कोई न भी आया, तब टी0वी0 के कार्यक्रम थोड़ी देर देखना जरूरी हो जाता है, अन्यथा पतिदेव की शिकायत कि दिन में आधा, एक घंटा भी साथ में बैठती नहीं। दिन–भर की थकान के बाद स्वाभाविक है कि साढ़े दस बजे बाद नींद घेर लेती है। इसी तरफ दिन बीतते जाते हैं और इसी रफ्तार से संगीत–साधना भी चलती रहती है। न छोड़ते बनता है, न करते। कभी यदि संगीत पर ज्यादा ध्यान देकर घर तथा बच्चों पर कम ध्यान दें, तो उसमें छिपी माँ और पत्नी उसे दोष देती हैं। कभी यदि संगीत की उपेक्षा कर गृहस्थी के काम में ज्यादा समय दे देती है, तो तानपुरा रुष्ट हुआ दिखाई देता है। आखिर गृहस्थ महिला संगीत–साधना करे, तो कैसे करे!

यदि परिवार संयुक्त हुआ, तो कुछ मददघर के काम में मिल जाती है तथा साथ में टीका–टिप्पणी भी। सासु माँ को कभी यह गवारा न होगा कि घर के काम में जरा भी ढिलाई आए या मेहमानों की देखरेख में जरा भी रुकावट आए। संयुक्त परिवार के कड़े अनुशासन तथा बहुत–सी जिम्मेदारियों के बीच रियाज़ का समय महिला को किसी तरह चुराना पड़ता है। संयुक्त परिवार में परिवारीजनों की संख्या भी अधिक होती है तथा सबका समय, सबकी पसंद इत्यादि का ध्यान घर की महिलाओं को ही रखना पड़ता है।

यदि परिवार विभक्त हुआ, तो अपनी स्वतंत्रता के साथ सब प्रकार की जिम्मेदारी भी महिला को ही निभानी पड़ती है। यहाँ उसे रोकने–टोकने वाला कोई नहीं होता, तो कोई मदद करने वाला भी नहीं होता। यहाँ भी समय के पीछे भागती हुई गृहिणी को रियाज के लिए समय किसी तरह चुराना पड़ता है। इसमें यदि आर्थिक कठिनाई के कारण या अन्य कारणों से वह कहीं नौकरी भी करती है, तब तो समय की ओर भी कमी रहती है। वह अपने ऑफिस के उत्तरदायित्व को निभाने के साथ घर–परिवार के प्रति भी अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करती है तथा इसी खींचातानी में वह शारीरिक एवं मानसिक रूप से काफी थक जाती है।

रियाज़ के लिए या साधना के लिए सबसे पहली शर्त है मानसिक स्वस्थता की लेकिन आज के तनावयुक्त शहरी जीवन में ऐसी स्वस्थता पाना तो बहुत कठिन हो जाता है। वर्तमान अत्यंत तेज गति से भागते जीवन के साथ कदम मिलाकर चलने में ही इतनी अधिक शक्ति खर्च हो जाती है कि आराम से रियाज या साधना बहुत दुष्कर हो जाती है। यदि दिन–भर की व्यस्तता के बाद रात्रि में साधना की जाए, तो अपने–आप पर तथा पड़ौसियों पर, घर के पढ़ने वाले बच्चे पर जुल्म हो जाता है। रात में सभी शांति चाहते हैं। इसमें रात्रि ग्यारह बजे के बाद रियाज से शांति भंग करना भी उचित नहीं लगता।

मैं स्वयं एक गृहिणी हूँ, संगीत–शिक्षिका हूँ एवं संगीत के साधना–मार्ग की पथिक हूँ। मेरा निजी अनुभव भी है कि घर–गृहस्थी एवं बच्चों के साथ संगीत–साधना करना, सीखी हुई विद्या को बढ़ाना या उतना ही टिकाए रखना बहुत कठिन हो जाता है। स्त्री–मात्र को, चाहे वह परिणीता हो या न हो, कभी–न–कभी घर की जिम्मेदारी सँभालनी ही पड़ती है। उनको भी जो विवाहित नहीं हैं, अपनी गृहस्थी के साथ संगीत–साधना करना उतना ही कठिन लगता है। मैंने कई गायिकाओं, वादिकाओं एवं अन्य महिला कलाकारों से बात की है। सभी का यही कहना था कि वे जितना कुछ करना चाहती हैं, उतना घर के साथ नहीं हो पाता। कई बार रियाज का सिलसिला छूट जाता है तथा जितना हो पाता है, उसी से संतोष कर लेना पड़ता है।

कुछ भाग्यशाली महिलाओं को परिवार के लोगों की संगीत में अत्यंत रुचि होने के कारण तथा परिवार द्वारा हमेशा उत्साहवर्धन करते रहने के कारण रियाज में कम कठिनाई होती है। जिस महिला–साधक के पति, बच्चे एवं परिवार वाले समझदार हैं, साधना का महत्त्व समझते हैं, उसके लिए उत्साहित करते हैं, वे सचमुच भाग्यशाली हैं, जैसे कि मैं। हाँ, कुछ महिला संगीत–साधक इतने संपन्न घरों से आती हैं कि उनके पास घर–गृहस्थी के काम के लिए दो–तीन नौकर हमेशा रहते हैं। उन पर गृहकार्य का बोझ मध्यवर्गीय महिलाओं की अपेक्षा कम है। उनको भी संगीत–साधना में अपेक्षाकृत कम कठिनाई उठानी पड़ती है।

एक संगीत–शिक्षिका के नाते मैं हमेशा अपनी विद्यार्थिनियों से यही कहती रहती हूँ कि वे अपने विद्यार्थी–जीवन में ही जितना अधिक समय देकर संगीत–साधना करना चाहें, कर लें–प्राप्त हुए समय एवं विद्या का सदुपयोग कर लें। बहुत–सी संगीत की छात्राओं का शादी के बाद गाना–बजाना छूट गया, ऐसा कहते हुए सुनी जा सकती है लेकिन मैं समझती हूँ कि हिम्मत हारने की जरूरत नहीं, यदि पहले अच्छी तालीम ली जा चुकी है तो बच्चे कुछ बड़े होने पर फिर से संगीत–साधना शुरू की जा सकती है।

विभिन्न समस्याओं के बावजूद संगीत–शिक्षा एवं संगीत साधना में रत कुछ महिलाओं से विचार विमर्श करने पर पता चला कि ये महिलाऐं इस क्षेत्र की ख्याति प्राप्त महिलाओं के परिवेश से हटकर हैं एवं इनकी प्रेरणा स्त्रोत इस क्षेत्र की सफल महिलाएँ हैं। मैं भी इस क्षेत्र से जुड़ी हूँ। पारिवारिक जीवन में आने पर अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा लेकिन हिम्मत और जुनून कुछ भी कराने के लिए प्रेरणा स्त्रोत का काम करता है।

अन्त में यही निष्कर्ष निकलता है कि नारी ईश्वर की एक अद्भुत–अलौकिक सृष्टि है। शक्ति, साहस, त्याग, दया, ममता एवं प्रेम जैसे दिव्य गुणों की प्रतीक होने के कारण वह अबला होते हुए भी सबला है। देखा जाए तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी ही प्रेरक शक्ति रही है।

संदर्भ :–

1. संगीत पत्रिकाएँ
2. संगीत विशारद–लक्ष्मी नारायण गर्ग
3. छात्राओं से वार्तालाप
4. भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देश्य–डॉ0 पूनम दत्ता